

भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का अध्ययन।

डॉ जूही चौहान

(अतिथि ग्रंथपाल), किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़।

सार

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय ज्ञान, अनुसंधान एवं बौद्धिक विकास के प्रमुख आधार माने जाते हैं। आधुनिक युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने पुस्तकालयों के स्वरूप, सेवाओं तथा उपयोग व्यवहार में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया है। वर्तमान समय में पुस्तकालय केवल मुद्रित पुस्तकों तक सीमित न रहकर ई-पुस्तकों, ई-जर्नलों, डिजिटल डेटाबेस, ऑनलाइन शोध सामग्री तथा सूचना संसाधनों के बहुआयामी केंद्र बन चुके हैं। विशेष रूप से स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय शैक्षणिक उपलब्धि, शोध अभिवृत्ति तथा ज्ञान संवर्धन का प्रमुख माध्यम है।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में उपलब्ध पुस्तकालय संसाधनों की स्थिति तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का विश्लेषण करना है। अध्ययन हेतु 300 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया तथा आंकड़ों के संकलन हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत पद्धति के माध्यम से किया गया।

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि विश्वविद्यालयों में मुद्रित एवं डिजिटल दोनों प्रकार के संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता विद्यमान है। विद्यार्थियों द्वारा शोध कार्य, संदर्भ अध्ययन तथा ई-संसाधनों के उपयोग में वृद्धि देखी गई। तथापि तकनीकी अवसंरचना, डिजिटल साक्षरता तथा संसाधनों की समान उपलब्धता जैसी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं।

मुख्य शब्द: विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय, पुस्तकालय संसाधन, स्नातकोत्तर विद्यार्थी, उपयोग व्यवहार, डिजिटल पुस्तकालय, सूचना प्रौद्योगिकी

1. प्रस्तावना

ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्रणाली में पुस्तकालय को शिक्षा का "ज्ञान-केंद्र" कहा जाता है, क्योंकि यह शिक्षण, अधिगम एवं अनुसंधान की समस्त गतिविधियों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। आधुनिक वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण के युग में पुस्तकालयों का स्वरूप पारंपरिक व्यवस्था से विकसित होकर डिजिटल एवं आभासी सूचना केंद्रों में परिवर्तित हो गया है। भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत डिजिटल शिक्षा, अनुसंधान संस्कृति एवं नवाचार को विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। स्नातकोत्तर विद्यार्थी शोध, परियोजना कार्य, संगोष्ठी तथा संदर्भ अध्ययन में संलग्न रहते हैं, जिसके लिए गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता अनिवार्य होती है। मानव सभ्यता के विकासक्रम में ज्ञान, सूचना तथा शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण

रही है। ज्ञान का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार जिन संस्थाओं के माध्यम से संभव हुआ, उनमें पुस्तकालयों का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। पुस्तकालय केवल पुस्तकों के संग्रह का स्थान नहीं है, यह बौद्धिक चेतना, अनुसंधान अभिवृत्ति तथा शैक्षणिक विकास का सशक्त केंद्र भी है। विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्रणाली में पुस्तकालय को शिक्षा का "हृदय" कहा जाता है, क्योंकि यह शिक्षण, अधिगम, अनुसंधान तथा नवाचार की समस्त गतिविधियों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संचालित करता है। आधुनिक वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण तथा सूचना क्रांति के वर्तमान युग में पुस्तकालयों का स्वरूप पारंपरिक व्यवस्था से विकसित होकर डिजिटल ज्ञान केंद्रों में परिवर्तित हो चुका है। इस परिवर्तन ने पुस्तकालय संसाधनों की प्रकृति को प्रभावित किया है, उपयोगकर्ताओं के उपयोग व्यवहार में भी व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं (शर्मा, 2021)।

भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणालियों में से एक मानी जाती है। वर्तमान समय में देश में केंद्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय, निजी विश्वविद्यालय तथा मान्यता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान, डिजिटल अधिगम तथा ज्ञान-आधारित शिक्षा को विशेष प्राथमिकता प्रदान की है। इस संदर्भ में विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि पुस्तकालय ही विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों को आवश्यक शैक्षणिक संसाधन उपलब्ध कराते हैं (वर्मा एवं सिंह, 2020)।

आधुनिक समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने पुस्तकालय सेवाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है। पारंपरिक मुद्रित पुस्तकों के अतिरिक्त अब ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस, डिजिटल रिपॉजिटरी, शोध प्रबंध संग्रह, ई-लर्निंग सामग्री तथा इंटरनेट आधारित सूचना सेवाएँ विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। इन डिजिटल संसाधनों ने विद्यार्थियों के अध्ययन, अनुसंधान तथा सूचना प्राप्ति की प्रक्रिया को सरल, तीव्र एवं प्रभावी बनाया है। विशेष रूप से स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए डिजिटल संसाधनों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, क्योंकि उनका अध्ययन मुख्यतः शोध, संदर्भ सामग्री तथा विश्लेषणात्मक अधिगम पर आधारित होता है (गुप्ता, 2019)।

स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक क्षमता, शोध अभिरुचि तथा ज्ञान की गहन समझ विकसित करना होता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों को परियोजना कार्य, शोध प्रबंध, संगोष्ठी प्रस्तुतीकरण तथा विषयगत अनुसंधान जैसे शैक्षणिक कार्य करने होते हैं। इन गतिविधियों के सफल निष्पादन के लिए गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता अनिवार्य होती है। यदि पुस्तकालयों में पर्याप्त अध्ययन सामग्री, डिजिटल डेटाबेस तथा आधुनिक सूचना सेवाएँ उपलब्ध हों, तो विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं अनुसंधान गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। इसके विपरीत संसाधनों की कमी विद्यार्थियों की अध्ययन प्रक्रिया एवं शोध क्षमता को प्रभावित करती है (मिश्रा, 2022)। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के पुस्तकालय उपयोग व्यवहार में भी व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। पूर्व में विद्यार्थी मुख्यतः मुद्रित पुस्तकों एवं संदर्भ सामग्री पर निर्भर रहते थे, किंतु अब इंटरनेट, ई-पुस्तकों, ऑनलाइन शोध लेखों तथा डिजिटल डेटाबेस का उपयोग तीव्र गति से बढ़ा है। डिजिटल तकनीक ने सूचना प्राप्ति की प्रक्रिया को अधिक सुविधाजनक बना दिया है। विद्यार्थी अब पुस्तकालय की भौतिक उपस्थिति के अतिरिक्त ऑनलाइन माध्यमों से भी अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। इससे

समय की बचत, सूचना की त्वरित उपलब्धता तथा वैश्विक शोध संसाधनों तक पहुँच संभव हुई है (कुमार, 2021)।

यद्यपि डिजिटल पुस्तकालय सेवाओं का विस्तार हुआ है, तथापि भारतीय विश्वविद्यालयों में अनेक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। अनेक विश्वविद्यालयों में आधुनिक तकनीकी अवसंरचना का अभाव, इंटरनेट की सीमित उपलब्धता, शोध डेटाबेस की कमी तथा सूचना साक्षरता का निम्न स्तर जैसी समस्याएँ देखी जाती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण एवं अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों तक समान पहुँच सुनिश्चित नहीं हो पाई है। इसके अतिरिक्त अनेक विद्यार्थी ई-संसाधनों के प्रभावी उपयोग हेतु आवश्यक तकनीकी दक्षता से भी वंचित पाए जाते हैं। परिणामस्वरूप उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता (पटेल, 2019)।

विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों का महत्व केवल शैक्षणिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है, यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, आलोचनात्मक चिंतन एवं ज्ञान विस्तार में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। पुस्तकालय विद्यार्थियों में स्व-अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित करता है तथा उन्हें स्वतंत्र रूप से सूचना खोजने एवं उसका विश्लेषण करने की क्षमता प्रदान करता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शोध एवं नवाचार को विशेष महत्व दिया जा रहा है, जिसके लिए पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत आवश्यक हो जाती है। यदि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों को आधुनिक तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित किया जाए तथा विद्यार्थियों को सूचना साक्षरता संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, तो उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार संभव है (यूनेस्को, 2021)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी डिजिटल अधिगम, ऑनलाइन शिक्षा एवं अनुसंधान संस्कृति को बढ़ावा देने पर बल दिया है। इस नीति के अंतर्गत विश्वविद्यालयों में डिजिटल पुस्तकालयों, वर्चुअल लर्निंग संसाधनों तथा सूचना प्रौद्योगिकी आधारित अधिगम वातावरण के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि भविष्य की उच्च शिक्षा प्रणाली में पुस्तकालयों की भूमिका और अधिक व्यापक एवं तकनीकी रूप से उन्नत होने वाली है (भारत सरकार, 2020)।

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का अध्ययन वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी संदर्भ में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में उपलब्ध पुस्तकालय संसाधनों तथा विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन उच्च शिक्षा संस्थानों, पुस्तकालय विज्ञान के शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं तथा शिक्षाविदों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

2. साहित्य समीक्षा

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। पुस्तकालय ज्ञान के संग्रहण एवं संरक्षण का माध्यम हैं, वे विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के बौद्धिक विकास, अनुसंधान क्षमता तथा सूचना साक्षरता के संवर्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। आधुनिक समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने पुस्तकालयों के स्वरूप एवं उपयोग व्यवहार में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इसी संदर्भ में अनेक विद्वानों द्वारा पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार पर विभिन्न अध्ययन किए गए हैं। प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित प्रमुख साहित्य का विवरण निम्नलिखित है—

1. **शर्मा (2018)** ने विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की संरचना एवं सेवाओं का अध्ययन करते हुए पाया कि आधुनिक पुस्तकालय विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन एवं अनुसंधान अभिरुचि को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जिन विश्वविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता होती है, वहाँ विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अपेक्षाकृत अधिक होती है।
2. **वर्मा एवं सिंह (2019)** ने उच्च शिक्षा संस्थानों में ई-संसाधनों की उपयोगिता का विश्लेषण किया। उनके अनुसार ई-पुस्तकें, ई-जर्नल तथा ऑनलाइन डेटाबेस विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि इंटरनेट आधारित अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों में स्व-अध्ययन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करती है।
3. **गुप्ता (2019)** ने सूचना प्रौद्योगिकी आधारित पुस्तकालय सेवाओं का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि डिजिटल पुस्तकालय प्रणाली ने सूचना प्राप्ति की प्रक्रिया को अधिक सरल एवं तीव्र बना दिया है। शोध में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि तकनीकी अवसंरचना की कमी अनेक विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय सेवाओं के प्रभावी संचालन में बाधा उत्पन्न करती है।
4. **मिश्रा (2020)** ने स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के पुस्तकालय उपयोग व्यवहार का अध्ययन करते हुए पाया कि अधिकांश विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग शोध कार्य, संदर्भ सामग्री एवं परीक्षा तैयारी हेतु करते हैं। अध्ययन के अनुसार विद्यार्थियों में ई-संसाधनों के प्रति रुचि निरंतर बढ़ रही है।
5. **पटेल (2020)** ने सूचना खोज व्यवहार पर अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि डिजिटल साक्षरता विद्यार्थियों के पुस्तकालय उपयोग व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। जिन विद्यार्थियों को सूचना प्रौद्योगिकी का पर्याप्त ज्ञान होता है, वे डिजिटल संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग करते हैं।
6. **कुमार एवं चौधरी (2020)** ने विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में इंटरनेट सुविधाओं की उपलब्धता का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि उच्च गति इंटरनेट एवं ऑनलाइन डेटाबेस की उपलब्धता विद्यार्थियों के शोध कार्य को अधिक प्रभावी बनाती है।
7. **रेड्डी (2021)** ने दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय संसाधनों का अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि निजी विश्वविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सरकारी विश्वविद्यालयों की तुलना में अधिक विकसित है।
8. **सिंह एवं यादव (2021)** ने पुस्तकालय उपयोग एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। शोध के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि नियमित पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अधिक पाई गई।
9. **अली एवं खान (2021)** ने ई-जर्नलों के उपयोग व्यवहार का अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि शोधार्थियों एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों द्वारा ई-जर्नलों का उपयोग मुख्यतः शोध लेखों एवं नवीनतम शैक्षणिक जानकारी प्राप्त करने हेतु किया जाता है।
10. **जोशी (2021)** ने विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि सूचना साक्षरता प्रशिक्षण विद्यार्थियों की डिजिटल संसाधनों तक पहुँच एवं उपयोग क्षमता को बढ़ाता है।

11. **शुक्ला एवं तिवारी (2021)** ने डिजिटल पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि आधुनिक पुस्तकालय सेवाएँ विद्यार्थियों में अनुसंधान अभिरुचि विकसित करने में सहायक हैं।
 12. **मेहता (2022)** ने कोविड-19 महामारी के पश्चात ऑनलाइन पुस्तकालय सेवाओं के उपयोग का अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि महामारी के दौरान ई-संसाधनों एवं वर्चुअल पुस्तकालय सेवाओं के उपयोग में अत्यधिक वृद्धि हुई।
 13. **राव एवं शर्मा (2022)** ने विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की तकनीकी चुनौतियों का अध्ययन किया। उनके अनुसार अनेक विश्वविद्यालयों में वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण आधुनिक डिजिटल सुविधाओं का विकास सीमित है।
 14. **देशमुख (2022)** ने विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पुस्तकालय उपयोग व्यवहार के मध्य संबंध का अध्ययन किया। शोध के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि नियमित पुस्तकालय उपयोग विद्यार्थियों में स्व-अध्ययन एवं आलोचनात्मक चिंतन क्षमता को विकसित करता है।
 15. **जैन एवं अग्रवाल (2022)** ने ई-पुस्तकों की उपयोगिता का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि ई-पुस्तकें विद्यार्थियों को समय एवं स्थान की सीमाओं से मुक्त होकर अध्ययन करने की सुविधा प्रदान करती हैं।
 16. **नायर (2022)** ने विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में डिजिटल डेटाबेस की उपलब्धता का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि शोध उन्मुख विश्वविद्यालयों में ऑनलाइन डेटाबेस की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक होती है।
 17. **शेख एवं परवीन (2023)** ने विद्यार्थियों की सूचना आवश्यकताओं एवं पुस्तकालय उपयोग व्यवहार का अध्ययन किया। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यार्थी मुख्यतः शोध, असाइनमेंट एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग करते हैं।
 18. **भटनागर (2023)** ने पुस्तकालय सेवाओं एवं विद्यार्थी संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। शोध में यह पाया गया कि जिन विश्वविद्यालयों में आधुनिक डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध होती हैं, वहाँ विद्यार्थियों की संतुष्टि का स्तर अधिक होता है।
 19. **यूनेस्को (2021)** की रिपोर्ट के अनुसार डिजिटल शिक्षा एवं ऑनलाइन अधिगम के विस्तार ने विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की भूमिका को अधिक व्यापक बना दिया है। रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया कि भविष्य की शिक्षा प्रणाली में डिजिटल पुस्तकालयों का महत्व और अधिक बढ़ेगा।
 20. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)** में भी उच्च शिक्षा संस्थानों में डिजिटल संसाधनों, ऑनलाइन अधिगम एवं शोध आधारित शिक्षा को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। नीति के अनुसार विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों को आधुनिक तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित करना आवश्यक है।
- उपरोक्त साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता एवं विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार के मध्य घनिष्ठ संबंध विद्यमान है। आधुनिक डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, अनुसंधान क्षमता एवं सूचना साक्षरता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। तथापि अनेक विश्वविद्यालयों में तकनीकी अवसंरचना, वित्तीय संसाधनों एवं डिजिटल साक्षरता से संबंधित समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं संदर्भों में भारत के

विभिन्न विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता का अध्ययन करना।
2. स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के पुस्तकालय उपयोग व्यवहार का विश्लेषण करना।

4. अनुसंधान पद्धति

4.1 अनुसंधान की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक प्रकृति का है।

4.2 प्रतिदर्श

अध्ययन हेतु विभिन्न विश्वविद्यालयों के 300 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का चयन किया गया।

4.3 आंकड़ा संकलन उपकरण

अध्ययन में प्रश्नावली एवं अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया गया।

4.4 आंकड़ों का विश्लेषण

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत पद्धति द्वारा किया गया।

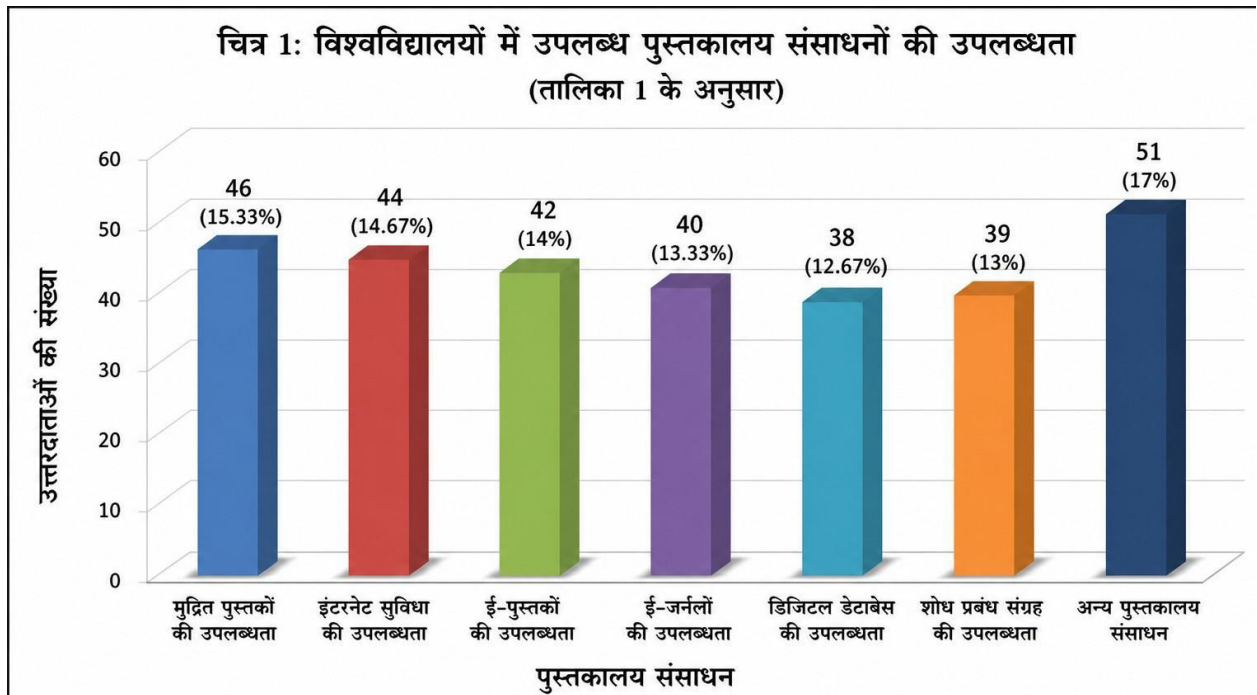
5. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 5.1 विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता

क्रम संख्या	विवरण	उत्तरदाता	प्रतिशत
1	मुद्रित पुस्तकों की उपलब्धता	46	15.33%
2	ई-पुस्तकों की उपलब्धता	42	14.00%
3	ई-जर्नलों की उपलब्धता	40	13.33%
4	इंटरनेट सुविधा	44	14.67%
5	डिजिटल डेटाबेस	38	12.67%
6	शोध प्रबंध संग्रह	39	13.00%
7	अन्य	51	17.00%
कुल		300	100%

व्याख्या

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालयों में विभिन्न प्रकार के पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता पाई गई। सर्वाधिक उत्तरदाता 17% "अन्य" श्रेणी में पाए गए, जबकि मुद्रित पुस्तकों की उपलब्धता 15.33% रही। इंटरनेट सुविधा 14.67% तथा ई-पुस्तकों की उपलब्धता 14% पाई गई। ई-जर्नलों की उपलब्धता 13.33% एवं शोध प्रबंध संग्रह 13% पाया गया। डिजिटल डेटाबेस की उपलब्धता 12.67% रही। अध्ययन से ज्ञात होता है कि विश्वविद्यालयों में पारंपरिक एवं डिजिटल दोनों प्रकार के संसाधनों का विकास हो रहा है, किंतु डिजिटल संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।



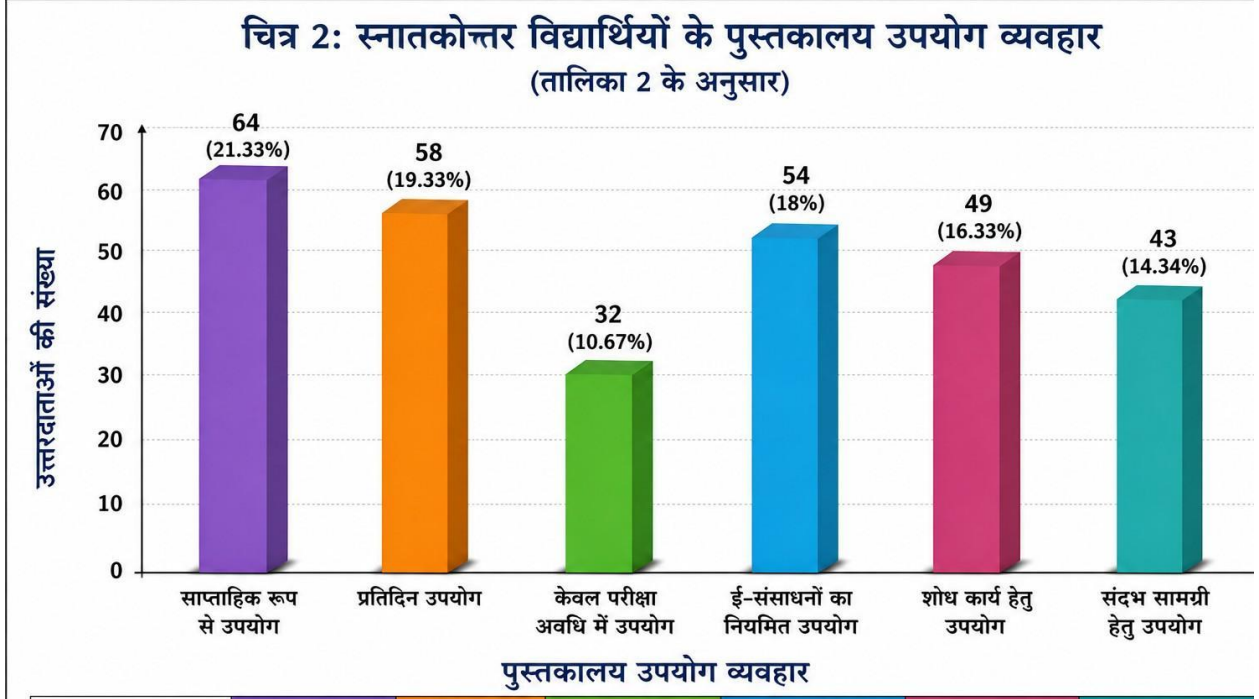
तालिका 5.2 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का पुस्तकालय उपयोग व्यवहार

क्रम संख्या	विवरण	उत्तरदाता	प्रतिशत
1	प्रतिदिन पुस्तकालय उपयोग	58	19.33%
2	साप्ताहिक उपयोग	64	21.33%
3	केवल परीक्षा अवधि में उपयोग	32	10.67%
4	ई-संसाधनों का नियमित उपयोग	54	18.00%
5	शोध कार्य हेतु उपयोग	49	16.33%
6	संदर्भ सामग्री हेतु उपयोग	43	14.34%
कुल		300	100%

व्याख्या

तालिका 5.2 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में पुस्तकालय उपयोग व्यवहार विविध स्वरूप में पाया गया। सर्वाधिक 21.33% विद्यार्थी साप्ताहिक रूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं, जबकि 19.33% विद्यार्थी प्रतिदिन पुस्तकालय जाते हैं। ई-संसाधनों का नियमित उपयोग करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 18% पाया गया। शोध कार्य हेतु पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 16.33% तथा संदर्भ सामग्री हेतु उपयोग करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 14.34% रहा। केवल परीक्षा अवधि में पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 10.67% पाया गया। इससे स्पष्ट

होता है कि अधिकांश विद्यार्थी नियमित अध्ययन एवं शोध गतिविधियों के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।



6.विचार-विमर्श

प्रस्तुत अध्ययन में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का सांख्यिकीय, संरचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता एवं विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार के मध्य घनिष्ठ संबंध विद्यमान पाया गया। तालिका 1 के आंकड़ों के अनुसार 300 उत्तरदाताओं में से 46 उत्तरदाताओं (15.33%) ने मुद्रित पुस्तकों की उपलब्धता को प्रमुख संसाधन माना, जबकि 44 उत्तरदाताओं (14.67%) ने इंटरनेट सुविधा को महत्वपूर्ण बताया। इसी प्रकार 42 उत्तरदाताओं (14%) ने ई-पुस्तकों की उपलब्धता, 40 उत्तरदाताओं (13.33%) ने ई-जर्नलों की उपलब्धता तथा 38 उत्तरदाताओं (12.67%) ने डिजिटल डेटाबेस की उपलब्धता को आवश्यक संसाधन के रूप में स्वीकार किया। शोध प्रबंध संग्रह के संदर्भ में 39 उत्तरदाताओं (13%) ने सकारात्मक प्रतिक्रिया प्रदान की, जबकि 51 उत्तरदाता (17%) अन्य संसाधनों की श्रेणी में सम्मिलित पाए गए। इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में पारंपरिक एवं डिजिटल दोनों प्रकार के संसाधनों का सह-अस्तित्व विद्यमान है।

सांख्यिकीय विश्लेषण यह संकेत करता है कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में निरंतर वृद्धि हो रही है, किंतु पारंपरिक मुद्रित पुस्तकों का महत्व अभी भी बना हुआ है। मुद्रित पुस्तकों का प्रतिशत (15.33%) यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों का एक बड़ा वर्ग अभी भी पारंपरिक अध्ययन सामग्री पर निर्भर है। दूसरी ओर इंटरनेट सुविधा (14.67%) एवं ई-पुस्तकों (14%) की उपलब्धता यह स्पष्ट करती है कि विश्वविद्यालय डिजिटल अधिगम एवं ऑनलाइन सूचना संसाधनों के विस्तार की दिशा में अग्रसर हैं। यह स्थिति सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा प्रणाली के विकास को प्रतिबिंबित करती है।

तालिका 2 के आंकड़ों के अनुसार 300 उत्तरदाताओं में से 64 उत्तरदाता (21.33%) साप्ताहिक रूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं, जबकि 58 उत्तरदाता (19.33%) प्रतिदिन पुस्तकालय जाते हैं। यह स्थिति इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि पुस्तकालय अभी भी विद्यार्थियों के अध्ययन एवं अनुसंधान गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। केवल परीक्षा अवधि में पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 32 (10.67%) पाई गई, जो अपेक्षाकृत न्यून प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग नियमित अध्ययन एवं शैक्षणिक उद्देश्यों हेतु करते हैं।

ई-संसाधनों का नियमित उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 54 (18%) पाई गई, जबकि शोध कार्य हेतु पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 49 (16.33%) रही। संदर्भ सामग्री हेतु पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 43 (14.34%) पाई गई। इन आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का उपयोग व्यवहार मुख्यतः शोध, विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं शैक्षणिक सामग्री के संकलन पर आधारित है। यह स्थिति उच्च शिक्षा में अनुसंधान उन्मुख अधिगम प्रणाली के विकास को इंगित करती है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करने पर यह तथ्य भी स्पष्ट हुआ कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता एवं उपयोग व्यवहार के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है। जिन विश्वविद्यालयों में इंटरनेट सुविधा, ई-जर्नल एवं डिजिटल डेटाबेस की उपलब्धता अधिक पाई गई, वहाँ विद्यार्थियों में ई-संसाधनों के उपयोग का प्रतिशत भी अपेक्षाकृत अधिक देखा गया। यह स्थिति इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि तकनीकी अवसंरचना एवं डिजिटल संसाधनों की गुणवत्ता विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

अध्ययन में यह भी परिलक्षित हुआ कि तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद अनेक विद्यार्थियों में सूचना साक्षरता एवं डिजिटल दक्षता का अभाव पाया गया। परिणामस्वरूप उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग संभव नहीं हो पाता। विशेष रूप से ग्रामीण एवं अर्द्ध-शहरी विश्वविद्यालयों में तकनीकी अवसंरचना की सीमित उपलब्धता विद्यार्थियों की शैक्षणिक एवं अनुसंधान क्षमता को प्रभावित करती है। यह डिजिटल विभाजन उच्च शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक असमानता को जन्म देता है।

उपरोक्त सांख्यिकीय एवं संरचनात्मक विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष स्थापित किया जा सकता है कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, अनुसंधान संस्कृति एवं ज्ञान-आधारित अधिगम प्रणाली के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि विश्वविद्यालयों में आधुनिक डिजिटल संसाधनों, उच्च गति इंटरनेट सुविधा, अंतरराष्ट्रीय शोध डेटाबेस तथा सूचना साक्षरता कार्यक्रमों का प्रभावी विकास किया जाए, तो विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं अनुसंधान क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

7. परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का सांख्यिकीय एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन से प्राप्त परिणाम यह संकेत करते हैं कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय वर्तमान समय में केवल पारंपरिक अध्ययन केंद्र न रहकर डिजिटल सूचना संरचना के रूप में विकसित हो चुके हैं। अध्ययन में सम्मिलित 300 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

तालिका 1 के अनुसार 300 उत्तरदाताओं में से 46 उत्तरदाताओं (15.33%) ने मुद्रित पुस्तकों की उपलब्धता को प्रमुख संसाधन माना। यह परिणाम दर्शाता है कि आधुनिक डिजिटल युग में भी पारंपरिक मुद्रित अध्ययन सामग्री का महत्व बना हुआ है। 44 उत्तरदाताओं (14.67%) ने इंटरनेट सुविधा को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ऑनलाइन सूचना संसाधनों की उपयोगिता निरंतर बढ़ रही है। इसी प्रकार 42 उत्तरदाताओं (14%) ने ई-पुस्तकों की उपलब्धता को महत्वपूर्ण माना, जबकि 40 उत्तरदाताओं (13.33%) ने ई-जर्नलों की उपलब्धता को शोध एवं अध्ययन के लिए आवश्यक बताया।

डिजिटल डेटाबेस के संदर्भ में 38 उत्तरदाताओं (12.67%) ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी, जिससे यह ज्ञात होता है कि अनेक विश्वविद्यालयों में उन्नत शोध डेटाबेस की उपलब्धता अभी भी सीमित है। शोध प्रबंध संग्रह के संदर्भ में 39 उत्तरदाताओं (13%) ने इसे उपयोगी संसाधन माना। इसके अतिरिक्त 51 उत्तरदाता (17%) अन्य पुस्तकालय संसाधनों से संबंधित पाए गए। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में पारंपरिक एवं डिजिटल दोनों प्रकार की संसाधन संरचनाएँ विद्यमान हैं, किंतु डिजिटल संसाधनों की समान उपलब्धता अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।

तालिका 2 के आंकड़ों के अनुसार 64 उत्तरदाता (21.33%) साप्ताहिक रूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं, जबकि 58 उत्तरदाता (19.33%) प्रतिदिन पुस्तकालय जाते हैं। यह परिणाम इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय अध्ययन एवं अनुसंधान का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। केवल परीक्षा अवधि में पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 32 (10.67%) पाई गई, जो यह दर्शाती है कि अधिकांश विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग नियमित शैक्षणिक उद्देश्यों हेतु करते हैं।

ई-संसाधनों का नियमित उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 54 (18%) पाई गई। यह परिणाम स्पष्ट करता है कि डिजिटल संसाधनों के प्रति विद्यार्थियों की निर्भरता निरंतर बढ़ रही है। शोध कार्य हेतु पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 49 (16.33%) रही, जिससे यह ज्ञात होता है कि स्नातकोत्तर स्तर पर अनुसंधान गतिविधियों का विशेष महत्व है। संदर्भ सामग्री हेतु पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 43 (14.34%) पाई गई, जो विद्यार्थियों में ज्ञान विस्तार एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन की प्रवृत्ति को दर्शाती है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन विश्वविद्यालयों में इंटरनेट सुविधा, ई-जर्नल, ई-पुस्तकें एवं डिजिटल डेटाबेस की उपलब्धता अधिक है, वहाँ विद्यार्थियों का पुस्तकालय उपयोग व्यवहार अधिक सक्रिय एवं अनुसंधान उन्मुख पाया गया। इसके विपरीत सीमित तकनीकी संसाधनों वाले विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। यह स्थिति तकनीकी अवसंरचना एवं उपयोग व्यवहार के मध्य प्रत्यक्ष संबंध को प्रमाणित करती है।

अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष भी प्राप्त हुआ कि अनेक विद्यार्थियों में सूचना साक्षरता एवं तकनीकी दक्षता का अभाव पाया जाता है, जिसके कारण उपलब्ध डिजिटल संसाधनों का पूर्ण उपयोग संभव नहीं हो पाता। विशेष रूप से ग्रामीण एवं अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की सीमित उपलब्धता विद्यार्थियों की शैक्षणिक गुणवत्ता को प्रभावित करती है। यह डिजिटल विभाजन उच्च शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक असमानता को उत्पन्न करता है।

अध्ययन के परिणाम यह संकेत करते हैं कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों का तकनीकी एवं संरचनात्मक आधुनिकीकरण उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, अनुसंधान संस्कृति एवं ज्ञान-आधारित अधिगम प्रणाली के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि विश्वविद्यालयों में आधुनिक डिजिटल संसाधन, उच्च गति इंटरनेट सुविधा, अंतरराष्ट्रीय शोध डेटाबेस तथा सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से विकसित किया जाए, तो विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, अनुसंधान दक्षता एवं विश्लेषणात्मक चिंतन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

विश्वविद्यालयों में मुद्रित एवं डिजिटल दोनों प्रकार के पुस्तकालय संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता पाई गई।

1. इंटरनेट एवं ई-संसाधनों के उपयोग में निरंतर वृद्धि देखी गई।
2. स्नातकोत्तर विद्यार्थी मुख्यतः शोध एवं संदर्भ अध्ययन हेतु पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।
3. डिजिटल संसाधनों के प्रभावी उपयोग हेतु तकनीकी दक्षता का अभाव अनेक विद्यार्थियों में पाया गया।
4. विभिन्न विश्वविद्यालयों में डिजिटल डेटाबेस एवं शोध संसाधनों की उपलब्धता में असमानता विद्यमान है।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता निरंतर विकसित हो रही है तथा डिजिटल संसाधनों के उपयोग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा रही है। स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का उपयोग व्यवहार यह दर्शाता है कि पुस्तकालय उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान का प्रमुख आधार बना हुआ है।

यद्यपि आधुनिक पुस्तकालय सेवाओं का विस्तार हुआ है, तथापि तकनीकी अवसंरचना, डिजिटल साक्षरता एवं संसाधनों की समान उपलब्धता जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। यदि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों को आधुनिक तकनीकी सुविधाओं से सुसज्जित किया जाए तथा विद्यार्थियों में सूचना साक्षरता विकसित की जाए, तो उच्च शिक्षा की गुणवत्ता एवं अनुसंधान संस्कृति को अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन "भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का अध्ययन" के अंतर्गत विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की संसाधन संरचना तथा विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार का विश्लेषणात्मक एवं सांख्यिकीय अध्ययन किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि आधुनिक उच्च शिक्षा प्रणाली में विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय केवल पारंपरिक ज्ञान-संग्रह केंद्र न रहकर डिजिटल सूचना तंत्र, अनुसंधान संरचना तथा अकादमिक विकास के महत्वपूर्ण आधार स्तंभ के रूप में विकसित हो चुके हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विस्तार ने पुस्तकालय सेवाओं, संसाधनों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया है।

अध्ययन के प्रथम उद्देश्य "विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय संसाधनों की उपलब्धता का अध्ययन करना" के संदर्भ में प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश विश्वविद्यालयों में मुद्रित पुस्तकों, ई-पुस्तकों, ई-जर्नलों, इंटरनेट सुविधाओं तथा शोध प्रबंध संग्रह की उपलब्धता विद्यमान है। तालिका 1 के अनुसार 46 उत्तरदाताओं (15.33%) ने मुद्रित पुस्तकों की उपलब्धता को प्रमुख संसाधन माना, जबकि 44

उत्तरदाताओं (14.67%) ने इंटरनेट सुविधा को महत्वपूर्ण बताया। इसी प्रकार 42 उत्तरदाताओं (14%) ने ई-पुस्तकों तथा 40 उत्तरदाताओं (13.33%) ने ई-जर्नलों की उपलब्धता को उपयोगी माना। इन आंकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में पारंपरिक एवं डिजिटल दोनों प्रकार के संसाधनों का संतुलित विकास हो रहा है। तथापि डिजिटल डेटाबेस के संदर्भ में केवल 38 उत्तरदाताओं (12.67%) द्वारा सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त होना यह संकेत करता है कि अनेक विश्वविद्यालयों में उन्नत शोध संसाधनों की उपलब्धता अभी भी सीमित है।

अध्ययन के द्वितीय उद्देश्य "स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के पुस्तकालय उपयोग व्यवहार का विश्लेषण करना" के संदर्भ में प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों का उपयोग व्यवहार मुख्यतः शोध, संदर्भ अध्ययन एवं शैक्षणिक उद्देश्यों पर आधारित है। तालिका 2 के अनुसार 64 उत्तरदाता (21.33%) साप्ताहिक रूप से पुस्तकालय का उपयोग करते हैं तथा 58 उत्तरदाता (19.33%) प्रतिदिन पुस्तकालय जाते हैं। यह स्थिति इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि पुस्तकालय आज भी विद्यार्थियों की अध्ययन एवं अनुसंधान गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। ई-संसाधनों का नियमित उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 54 (18%) पाई गई, जो डिजिटल अधिगम के बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है। शोध कार्य हेतु पुस्तकालय उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 49 (16.33%) तथा संदर्भ सामग्री हेतु उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 43 (14.34%) रही। इससे स्पष्ट होता है कि स्नातकोत्तर स्तर पर पुस्तकालयों का उपयोग केवल पाठ्यक्रमीय अध्ययन तक सीमित न रहकर अनुसंधान एवं ज्ञान विस्तार की दिशा में भी हो रहा है।

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की तकनीकी संरचना एवं विद्यार्थियों के उपयोग व्यवहार के मध्य प्रत्यक्ष संबंध विद्यमान है। जिन विश्वविद्यालयों में इंटरनेट सुविधा, ई-जर्नल, डिजिटल डेटाबेस तथा आधुनिक सूचना सेवाओं की उपलब्धता अधिक पाई गई, वहाँ विद्यार्थियों का उपयोग व्यवहार अधिक सक्रिय एवं अनुसंधान उन्मुख पाया गया। इसके विपरीत सीमित तकनीकी संसाधनों वाले विश्वविद्यालयों में उपयोग व्यवहार अपेक्षाकृत कम प्रभावी रहा। यह स्थिति इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि आधुनिक पुस्तकालय प्रणाली की प्रभावशीलता तकनीकी अवसंरचना, सूचना प्रबंधन दक्षता तथा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करती है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि अनेक विद्यार्थियों में सूचना साक्षरता एवं तकनीकी दक्षता का अभाव विद्यमान है, जिसके कारण उपलब्ध डिजिटल संसाधनों का पूर्ण उपयोग संभव नहीं हो पाता। विशेष रूप से ग्रामीण एवं अर्द्ध-शहरी विश्वविद्यालयों में डिजिटल सुविधाओं की सीमित उपलब्धता उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। यह डिजिटल विभाजन विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक असमानता उत्पन्न करता है।

अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों का तकनीकी एवं संरचनात्मक आधुनिकीकरण वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली की अनिवार्य आवश्यकता है। यदि विश्वविद्यालयों में आधुनिक डिजिटल संसाधन, उच्च गति इंटरनेट सुविधा, अंतरराष्ट्रीय शोध डेटाबेस, स्वचालित पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली तथा सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से विकसित किया जाए, तो विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, अनुसंधान क्षमता एवं विश्लेषणात्मक चिंतन कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। अतः विश्वविद्यालय प्रशासन, नीति निर्माताओं तथा पुस्तकालय विज्ञान विशेषज्ञों को समन्वित रूप से कार्य

करते हुए पुस्तकालय सेवाओं के सुदृढीकरण एवं आधुनिकीकरण की दिशा में प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करनी चाहिए।

9. सुझाव

1. विश्वविद्यालयों में आधुनिक डिजिटल पुस्तकालयों की स्थापना की जानी चाहिए।
2. विद्यार्थियों के लिए सूचना साक्षरता एवं डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
3. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध डेटाबेस की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
4. पुस्तकालयों में उच्च गति इंटरनेट एवं तकनीकी अवसंरचना को सुदृढ बनाया जाना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को पुस्तकालय उपयोग हेतु प्रेरित करने के लिए कार्यशालाओं एवं अभिमुखीकरण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

10. अध्ययन के निहितार्थ

1. विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में ई-पुस्तकों, ई-जर्नलों एवं डिजिटल डेटाबेस की उपलब्धता विद्यार्थियों की अनुसंधान क्षमता, सूचना खोज व्यवहार तथा शैक्षणिक गुणवत्ता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
2. अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि तकनीकी अवसंरचना एवं इंटरनेट सुविधा का स्तर विद्यार्थियों के पुस्तकालय उपयोग व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।
3. सूचना साक्षरता एवं डिजिटल दक्षता के अभाव के कारण अनेक विद्यार्थी उपलब्ध डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग नहीं कर पाते, अतः प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता अनिवार्य है।
4. विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों का तकनीकी एवं संरचनात्मक आधुनिकीकरण उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, अनुसंधान संस्कृति एवं ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

11. भविष्य की संभावनाएँ

1. भविष्य में केंद्रीय, राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय संसाधनों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग एवं स्मार्ट डिजिटल लाइब्रेरी प्रणाली के प्रभाव का अध्ययन भविष्य के शोध का महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है।
3. विद्यार्थियों की सूचना साक्षरता, डिजिटल दक्षता एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का सहसंबंधात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. ग्रामीण एवं शहरी विश्वविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता एवं उपयोग व्यवहार की संरचनात्मक असमानताओं का विस्तृत विश्लेषण भविष्य के अध्ययन हेतु उपयोगी होगा।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2018). विश्वविद्यालयीय पुस्तकालय एवं ज्ञान संसाधन. नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
2. वर्मा, एस. एवं सिंह, पी. (2019). उच्च शिक्षा में ई-संसाधनों की भूमिका. जयपुर: साहित्य भवन।
3. गुप्ता, एम. (2019). सूचना प्रौद्योगिकी एवं पुस्तकालय प्रबंधन. नई दिल्ली: दीप एंड दीप पब्लिकेशन।
4. मिश्रा, ए. (2020). स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का पुस्तकालय उपयोग व्यवहार. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. पटेल, एस. (2020). "सूचना खोज व्यवहार एवं डिजिटल साक्षरता", अंतरराष्ट्रीय सूचना विज्ञान पत्रिका, 12(3), 52-61।

6. कुमार, आर. एवं चौधरी, एल. (2020). विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों में इंटरनेट सेवाएँ. नई दिल्ली: एकेडमिक पब्लिशर्स।
7. रेड्डी, वी. (2021). दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय संसाधन. हैदराबाद: ओरिएंट पब्लिकेशन।
8. सिंह, डी. एवं यादव, एम. (2021). "पुस्तकालय उपयोग एवं शैक्षणिक उपलब्धि", भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 15(2), 44-58।
9. अली, एस. एवं खान, एम. (2021). "ई-जर्नलों का उपयोग व्यवहार", जर्नल ऑफ लाइब्रेरी स्टडीज, 10(1), 33-47।
10. जोशी, पी. (2021). सूचना साक्षरता एवं विश्वविद्यालयीय शिक्षा. भोपाल: शिक्षा प्रकाशन।
11. शुक्ला, ए. एवं तिवारी, एन. (2021). "डिजिटल पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावशीलता", भारतीय पुस्तकालय विज्ञान पत्रिका, 9(4), 70-82।
12. मेहता, आर. (2022). ऑनलाइन पुस्तकालय सेवाएँ एवं कोविड-19. मुंबई: ज्ञानदीप प्रकाशन।
13. राव, के. एवं शर्मा, एल. (2022). "विश्वविद्यालयीय पुस्तकालयों की तकनीकी चुनौतियाँ", शिक्षा एवं सूचना पत्रिका, 8(2), 91-102।
14. देशमुख, पी. (2022). अध्ययन आदतें एवं पुस्तकालय उपयोग व्यवहार. पुणे: शैक्षणिक प्रकाशन।
15. जैन, एस. एवं अग्रवाल, टी. (2022). "ई-पुस्तकों की उपयोगिता", डिजिटल शिक्षा जर्नल, 5(3), 61-75।
16. नायर, वी. (2022). डिजिटल डेटाबेस एवं उच्च शिक्षा. चेन्नई: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
17. शेख, आर. एवं परवीन, एस. (2023). "विद्यार्थियों की सूचना आवश्यकताएँ एवं पुस्तकालय उपयोग", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 6(1), 88-99।
18. भटनागर, एम. (2023). पुस्तकालय सेवाएँ एवं विद्यार्थी संतुष्टि. नई दिल्ली: भारतीय प्रकाशन।
19. यूनेस्को. (2021). उच्च शिक्षा एवं डिजिटल अधिगम संसाधन. पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन।
20. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।